CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री जिनदास कवि प्रणीत

श्री शांतिनाथ विधान

प्रकाशक

श्रीमती कमला जैन चेरिटेबल ट्रस्ट

बी - 38, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली - 110016

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

103

श्री जिनदास कवि प्रणीत

श्री शांतिनाथ विधान

हिन्दी पद्यानुवाद

पं. ताराचन्द जैन शास्त्री, रेवाड़ी, हरियाणा

सम्पादन एवं प्रस्तावना

डॉ. अशोक जैन गोयल शास्त्री

157, चन्द्र विहार, दिल्ली - 92

5885

प्रकाशक

श्रीमती कमला जैन चेरिटेबल ट्रस्ट

वी - 38, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली - 110016

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम संस्करण- अनंत चतुर्दशी, भाद्र मास, वि.सं. 2065 (सन् 2008)

अमूल्य मूल्य - श्री शांतिनाथ प्रभु की नित्य आराधना

प्राप्ति-स्थान

1. श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर
एन - 10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली - 16

2. श्रीमती कमला जैन चैरिटेबल ट्रस्ट
वी- 38, ग्रीन पार्क मेन, नई दिल्ली - 16
फोन : 26564614

3. श्री कमलेश कुमार अनुज कुमार जैन
बिजली मार्केट, भागीरथ पैलेस,
चाँदनी चौक, दिल्ली - 6

मुद्रण :
इसमा ऐक्सल कम्प्यूग्राफिक्स सेन्टर
ई-128/2, मोहम्मदपुर मार्केट, नई दिल्ली-110 066
फोन: 26185055, 9868029096, 9818538580

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दो शब्द

अग्नि स्वभाव से सदा उष्ण ही है। जो भी उसे हाथ में उठायेगा वह नियम से जलेगा ही। उसी प्रकार किसी भी काल में और कैसी ही परिस्थितिवश जो कोई भी श्रावक धर्मादा (निर्माल्य) का उपयोग करेगा व ग्रहण करेगा, वह नियमतः जन्म-जन्म में दुःखरूपी दावानल में जलेगा ही जलेगा।

मानव मन पापी और चंचल है, परिस्थिति आने पर वह मार्ग निकालकर पाप कर बैठता है। जिसके फलस्वरूप 84 लाख योनियों में भटक-भटक कर अनंत दुखों को भोगना पड़ता है।

विचारणीय बात यह है कि कल्याणार्थी महापुरुषों ने तो अपनी न्यायपूर्वक अर्जित सम्पत्ति को भी जीर्ण तृणवत् त्याग कर अपना आत्मकल्याण किया है और पाप बुद्धि से प्रेरित अविवेकियों की बुद्धि सत् कार्य में दान की हुई सम्पत्ति (पदार्थ) को ग्रहण करने के लिए लालायित हो रही है, क्या इससे बड़ा और कोई पाप (अनर्थ) इस जगत में हो सकता है ? नहीं।

अपने विवेक को सजग रखते हुए इस पाप से बचते रहना चाहिए। यदि दान नहीं दे सकते तो उतनी हानि नहीं है, किन्तु दान में दी हुई धर्मादा की वस्तु को ग्रहण करने में महा हानि है।

आदरणीय डॉ. पं. अशोक जैन शास्त्री जी ने अथक परिश्रम कर यह श्री शांतिनाथ विधान साधारण से साधारण मनुष्यों के उपकार हेतु तैयार किया है। हम उनका हृदय से आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत शांतिविधान के द्वारा सभी को सच्ची शांति प्राप्त हो - यही हमारी हार्दिक कामना है।

महेन्द्र जैन
प्रकाशक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विधान के लिए आवश्यक सामग्री

1. विधान का मांडना (थाली पर अंकित /वस्त्र पर अंकित)।
2. सिंहासन/यंत्र/चंवर/जिनशास्त्र/भगवान का फोटो (यदि पाठ घर पर हो तो)।
3. जिनवाणी (पूजन पुस्तक), विधान की पुस्तकें आवश्यकतानुसार।
4. मंगल कलश 5, नारियल सूखे 5, लाल या केसरिया सूती वस्त्र (डेढ़ मीटर) नारियल लपेटने हेतु।
5. हल्दी साबुत 25 गांठें, 25 सुपारी साबुत छोटी, 50 ग्राम पीली सरसों, 5 चांदी के स्वस्तिक (उपलब्ध हों तो), पंचरत्न, 5 सिक्के, व 5 चवन्नी।
6. कलावा 2-3 रील, लघु ध्वजा।
7. पूजन सामग्री अष्टद्रव्य सहित, पूजन बर्तन उपकरण, अष्टमंगल द्रव्य, झारी, बड़ी परात शांतिधारा हेतु आवश्यकतानुसार।
8. गोले छिले हुए 7, लोंग 100 ग्राम, धूप शुद्ध 100 ग्राम, बादाम साबुत 500 ग्राम। पिसी हुयी केसर एक ग्राम।
9. दीपक, घी 250 ग्राम, रुई, माचिस, कपूर 50 ग्राम, एक चम्मच बड़ी।
10. शुद्ध धोती-दुपट्टा पुरुषवर्ग हेतु, महिला वर्ग हेतु केसरिया सूती साड़ी।
11. हार मुकुट (यदि उपलब्ध हो तो), माइक व संगीतकार सुविधानुसार।
12. चौकी/तखत/चटाईयाँ आवश्यकतानुसार।
13. यदि शांतियज्ञ (हवन) करना हो तो मिट्टी का कुण्ड, शुद्ध धूप, गोला आवश्यकतानुसार।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शांतिनाथ विधान : क्या, क्यों और कैसे?

-डॉ० अशोक जैन शास्त्री

जिनशासन में परमात्मपद की प्राप्ति हेतु गृहस्थ श्रावक के लिए प्रथम प्रयत्न जिनदर्शन व पूजन कहा है। श्रावक के षट् आवश्यक कर्त्तव्यों में देवपूजा को प्रथम कर्त्तव्य माना गया है। 'पद्‌मनंदि पंचविशतिका' ग्रन्थ में पद्‌मनंदी आचार्य कहते हैं- "जो श्रावक जिनेन्द्रदेव के दर्शन- पूजन आदि नहीं करते हैं उनका जीवन व्यर्थ है, उनके गृहस्थाश्रम को धिक्कार हैं"। संतलाल कवि सिद्धचक्र विधान की तिसरी जयमाला में लिखते हैं-

"स्वपन में हू न निज अर्थ को पावहिं।
जे महा खल न तुम ध्यान धरि ध्यावहिं।।

जो जिनेन्द्र देव का स्तवन नहीं करता है, वह महाखल (दुष्ट) है, उसे स्वप्न में भी शुद्धात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

जिनदर्शन आत्मदर्शन का मूल साधन है। जिनबिम्बरूपी दर्पण में ही भव्य जीव को स्व-आत्मबोध प्राप्त होता है।

कविवर भूधरदास जी ने जिन दर्शन-पूजन के प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए सुन्दर कवित्त लिखा है, जो विशेष रूप से पठनीय है-

"जाके मुख देखन को भक्तनि के नैनन को,
थिरता की वान बढ़ैं, चंचलता विनसी।
मुद्रा देखे केवली की, मुद्रा याद आवे जहाँ,
जाके आगे इन्द्र की विभूति दीखी तिन सी।।"

रत्नकरण्डश्रावकाचार में जिनपूजन के माहात्म्य को स्वामी समन्तभद्र ने इस प्रकार स्पष्ट किया है-

"देवाधिदेवचरणे परिचरणं सर्वदु:खनिर्हरणम्।
कामदुहि कामदाहिनि परिचिनुयादादृतो नित्यम्।।"

अर्थात् देवाधिदेव जिनेन्द्र देव के चरण सर्वप्रकार के मनोरथों को पूर्ण करने वाले हैं, काम विकार को जलाने वाले हैं ओर सर्वदु:खों के विनाशक हैं। अत:

4885

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदरपूर्वक भक्तिभाव के साथ नित्य ही उनके चरण-कमलों की पूजा करनी चाहिये।

शांतिनाथ विधान क्या है ?

वर्तमान 24 तीर्थंकरों में से भगवान शांतिनाथ 16वें तीर्थंकर हैं, जो पंचम चक्रवर्ती और 12वें कामदेव भी थे। समन्तभद्रस्वामी ने स्वयंभूस्तोत्र में भगवान शान्तिनाथ की भावपूर्ण स्तुति की है। इस पूजा विधान में भगवान शान्तिनाथ की विशिष्ट आराधना की गई है, जो भव्य जीवों के लिए अत्यंत शांतिकारक व मंगलदायी है। श्री जिनदास प्रणीत इस विधान के प्रारंभ में एक विशेष कथानक का उल्लेख किया गया है, जो इसके माहात्म्य को प्रकट करने के लिए पर्याप्त है। एक बार मथुरा नगरी में किसी कारण वश एक देव ने कुपित होकर भयंकर व्याधि से प्रजाजन को त्रस्त कर दिया, जिससे राजा और नगरवासियों ने मथुरा नगरी को छोड़ दिया। संयोगवश मथुरानगर में शुक्लपक्ष की त्रयोदशी के दिन सेठ सुमति पधारे, प्रजा से शून्य नगर की स्थिति को देखकर अत्यंत दुःखित हुए। उन्होंने भगवान की भक्ति करने के लिए जिनालय में प्रवेश कर श्री जिनेन्द्रदेव के दर्शन किये और वहाँ विद्यमान ऋद्धिधारी मुनिराज के दर्शन भी किए । उन्होंने रोग-व्याधि के शमन करने का उपाय मुनिराज से पूछा। मुनिश्री ने सोलह दिवसीय शांतिनाथ विधान शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से पूर्णमासी तक प्रतिदिन विधानपूजा व शांतिमंत्राराधना करने का उपदेश दिया । तदनुसार विधानपूजा व मंत्राराधना से प्रकोप का शमन हो गया और मथुरा नगरी पुनः हरी-भरी हो गई- यह इस विधान की विशेषता है। श्रद्धापूर्वक किये गये जिन स्तवन का अचिन्त्य प्रभाव व फल है। सभी विघ्नबाधाएँ, परेशानियाँ और विषम परिस्थितियों के समाधान जिनभक्ति पूजन से तत्काल हो जाते हैं। कहा भी है:-

"विघ्नौघा प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।"

विषम परिस्थितियों में, संकट के काल मे हमें वीतरागदेव की ही शरण लेना चाहिये, उनका पावन स्तवन भव-भव के बांधे हुए अशुभ कर्म की निर्जरा करने में कारण है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्या देवी–देवताओं की आराधना व अन्य मिथ्यात्व पोषक विपरीत कार्यों के करने से हमारे संकट, दुख कभी भी नहीं मिटते हैं, अपितु उनके सेवन से मिथ्यात्व कर्म का तीव्र बंध और हो जाता है, जो संसारपरिभ्रमण व अनंतदु:ख का कारण है। अशुभकर्म का प्रक्षालन एक मात्र जिनेन्द्रदेव की सम्यक आराधना से ही संभव है। सीता, अंजना, द्रौपदी, श्रीपाल आदि अनेक भव्यात्माओं के संकट जिनभक्ति से ही दूर हुए हैं। स्वयंभूस्तोत्र में समन्तभद्रस्वामी ने भगवान शांतिनाथ को शरणागतों के लिए शांति का विधाता कहा है। जिन्होंने अपने दोषों को शान्त कर आत्मशांति को प्राप्त किया है ऐसे शांतिप्रभु मेरे लिए शरणभूत हैं और मेरे भवभ्रमण, क्लेशों व भयों के उपशांति के लिए निमित्त होवें)। मूल श्लोक इस प्रकार है:-

"स्वदोषशान्त्या विहितात्मशांति:,
शान्तेर्विधाता शरणंगतानाम्।
भूयाद् भवक्लेशभयोपशान्त्यै
शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्य:।।"

'शान्त्यष्टक' शांतिभक्ति में पूज्यपाद स्वामी ने भगवान शांतिनाथ की स्तुति करते हुए लिखा है–

"पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्पीडा: प्रयान्ति क्षयम्"

अर्थात् जो भगवान शान्तिनाथ के चरणों में भावपूर्ण नमन व स्तवन करता है उसकी सारी पीड़ायें स्वयमेव शान्त हो जाती हैं। शांतिप्रभु शरणागतों के लिए स्वयमेव ही शांति के विधाता होते हैं, उनका मंगलमय स्तवन भव्य जीवों को स्वयं ही शांति का अनुभव कराता है। वे किसी को शांति देते नहीं हैं, जो उनकी शरण में आता है, वृक्ष की भांति वह स्वयं ही शांति व शीतलता का अनुभव करता है।

प्रश्न– क्या भगवान शांतिनाथ की आराधना से ही हमारे संकट, विघ्न नष्ट होते हैं ?

उत्तर– वस्तुत: जिनशासन में सभी तीर्थंकरों पंचपरमेष्ठी का श्रद्धापूर्वक पावन स्तवन भव्यजीवों के पापकर्म का नाशक व विघ्नों का निवारक है। सभी परमात्मा शांतिस्वरूप व शांतिदायक है। शांति के लिए शांतिनाथ भगवान की आराधना विशेषरूप से इसलिए की जाती है क्योंकि 16 वें तीर्थंकर शांतिनाथ भगवान के बाद वीतरागी जिनधर्म का कभी विच्छेद नहीं हुआ। 8वें तीर्थंकर से धर्मनाथ तीर्थंकर के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शासनकाल के बीच में धर्म का विच्छेद होता रहा है। भगवान शांतिनाथ के शासनकाल से वर्तमान जिनशासन नायक वर्धमान स्वामी तक जिनधर्म की प्रभावना बिना बाधा के निरन्तर चल रही है और सभी भव्यात्मा परम शांति का आज भी अनुभव कर रहे हैं।

शांतिविधान क्यों ?

इस विधान पूजा का मूल लक्ष्य शांतिप्रभु की आराधना से सांसारिक प्रतिकूलताओं, बाधाओं का शमन करते हुए बहिरात्मा से अन्तरात्मा बनने की प्रेरणा प्राप्त करना है और भव्यजीवों को संकट निवारण के लिए अन्य मिथ्यादेवी-देवताओं की आराधना व मिथ्यात्वपोषक क्रियाओं से छुटकारा दिलाना है।

वर्तमान में सांसारिक प्राणी भोगविलास में सुख मानता हुआ, उनकी प्राप्ति के लिए बेचैन और परेशान है। मनचाहे सुख की प्राप्ति की जगह उसे अनेक संकटों व दु:खों का सामना बार-बार करना पड़ा रहा है। दु:खों से मुक्त होने के लिए वह मिथ्यात्वपोषक क्रियाओं के चक्कर में पड़कर अपने दु:खों को और बढ़ाता जा रहा है। ऐसे भ्रमित जीवों को कुमार्ग से छुटकारा दिलाने के लिए शांतिदायक शांतिनाथ विधान की पूजा की जाती है। यह विधान दुखों के शमन करने के लिए उत्तम साधन है।

शांतिविधान का समय-

1. यह विधान 16 दिन वाले शुक्लपक्ष में प्रतिदिन 1000 शांतिमंत्र (10 माला) के जाप सहित किया जाता है।
2. एक दिन का शांतिनाथ विधान किसी भी दिन शुभमुहूर्त में किया जा सकता है।
3. विधान का समय प्रात:काल ही श्रेष्ठ माना गया है, समयाभाव वश शुद्धिपूर्वक मध्याह्नकाल में भी विधान किया जा सकता है।

शांतिविधान कहाँ करें-

वीतरागी शांतिप्रभु की विशेष आराधना जिनालय में जिनेन्द्र देव के समक्ष अनंतगुना फलदायक है। घर में मंत्राराधना से सामान्य फल प्राप्त होता है। गृहस्थजीवन पापों से लिप्त जीवन है, घर का वातावरण विषय-कषायों से सहित है। अत:

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शांतिविधान घर में करना विशेष लाभकारी नहीं है। नूतन गृह व व्यापार स्थल पर अनेक महानुभाव यह विधान करते हैं तो उन्हें विशेष शुद्धि का ध्यान रखना चाहिए। अशुद्धस्थान पर की गई मंत्राराधना भव्यजीवों के लिए मंगलकारी नहीं है।

शांतिविधान कौन कर सकता है–

1. यह विधान कोई भी श्रावक जो पूजा विधान की सामान्य जानकारी रखता हो, वह शुद्धिपूर्वक कर सकता है।
2. विधानकर्ता को सभी मंत्रों का शुद्ध वाचन करना चाहिये। मंत्र का अशुद्ध उच्चारण विपरीत फल भी दे सकता है।
3. विधान की सम्पूर्ण क्रियाएँ नियमबद्ध होकर सावधानी पूर्वक करना चाहिये।
4. सोलह दिवसीय शांतिविधान, विशेषज्ञ श्रावक या विद्वान के सान्निध्य में ही कराना चाहिये।

शांतिनाथ विधान का संक्षिप्त विवरण–

1. इस विधान में एक पूजा , चार वलय में 120 अर्घ, 6 पूर्णार्घ, एक स्तवन और एक जयमाला है।
2. इस विधान का मूलमंत्र ह्रीं बीजाक्षर है। यह बीजाक्षर 24 तीर्थंकर का वाचक व कल्याणकारक है।
3. प्रथम वलय में ह, भ, म,र, घ, झ, स, ख, ये 8 मूल बीज मंत्र हैं। मूल बीज मंत्रों का अर्थ क्रम से इस प्रकार है–

ह – शांतिकारक एवं पौष्टिक	घ – विघ्ननाशक
भ – भरणपोषक	झ – आधि व्याधिनाशक
म – सिद्धिदायक	स – आत्मासूचक
र – अग्निवीज शक्तिवर्धक	ख – ऊर्ध्वगति द्योतक

इन मंत्रों के साथ समवशरण में स्थित अर्हन्तभगवान की वाह्य विभूति रूप 8 प्रातिहार्य का वर्णन किया गया है। ये 8 प्रातिहार्य तीर्थंकर अरहंत परमेष्ठी के ही प्रकट होते हैं, अन्य के नहीं होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4. द्वितीय वलय पूजा में 16 अर्घ सहित शांतिनाथ भगवान की आराधना है। प्रारंभ के 5 अर्घो में त्रिकालवर्ती पंच परमेष्ठी का स्तवन तदनन्तर 3 अर्घो में रत्नत्रय और अन्त के 8 अर्घों में अष्टकर्मनाशक शांतिप्रभु का मंगलमय स्तवन है।
5. तृतीय वलय पूजा में तीन लोकों के प्रतिनिधि देवता (इन्द्र) जिनेन्द्रदेव का सपरिवार पूजन कर रहे हैं । भवनवासी के 10 इन्द्र, व्यंतरदेव के 8 इन्द्र, ज्योतिषीदेव के 2 इन्द्र और कल्पवासी वैमानिक देव के 12 इन्द्र-ये सभी 32 प्रमुख इन्द्र असंख्य देवों सहित भगवान की आराधना भक्तिभावपूर्वक करते हैं। जो हमें प्रेरणा देती है कि वीतराग देव की आराधना सदा, परिवार सहित करनी चाहिये।
6. चतुर्थवलय में विघ्ननाशक व फलदायक 64 गुणों सहित शांतिप्रभु की अर्चना की गयी है। वे 64 ऋद्धियों के स्वामी थे। प्रारंभ के 32 अर्घो में सांसारिक मानव जीवन में अशुभ कर्मोदय वश आने वाली 32 विघ्न बाधाओं को शमन करने की भावना व्यक्त की गई है और अन्त के 32 अर्घो में उत्तम फलदायक गुणों का विवेचन किया गया है।

क्या शांतिनाथ विधान और शांतिविधान एक ही है ?

प्राय: शांतिनाथ विधान को शांतिविधान कहकर बोला जाता है परन्तु इन दोनों में थोड़ा अन्तर है।

शांतिनाथ विधान में 16वें तीर्थंकर शांतिनाथ भगवान का गुणानुवाद करते हुए पूजा की गई है और शांतिविधान में शांतिस्वरूप नवदेवता, 24 तीर्थंकर एवं पंचपरमेष्ठी का स्वरूप, निरूपण करते हुए पूजा की जाती है।

यह शांतिनाथ विधान जिनदास कवि प्रणीत है और शांतिविधान आचार्य सन्मतिसागर व कवि राजमल पवैया द्वारा रचित है। दोनों का मूल उद्देश्य एक ही है।

शांतिनाथ विधान कैसे करें (विधान की संक्षिप्त विधि)

1. विधान मनोयोगपूर्वक श्रद्धापूर्वक शांत वातावरण में करना चाहिये।
2. विधान के लिए शुद्ध, प्रासुक (जीव - जन्तुओं से रहित) व स्वच्छ स्थान होना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

3. विधान स्थल पर विधान का सुन्दर, आकर्षक मांडना टेबिल या तखत पर तैयार करना आवश्यक है। मांडना वलयाकार बनाना चाहिए।

4. विधान स्थल पर आवश्यकतानुसार चौकी/चटाई/पर्याप्त पूजन सामग्री/पूजन के बर्तन/6 गोले/130 बादाम साबुत तैयार करके रख लें।

5. मंडल के मध्य विधिपूर्वक सिंहासन पर विनायक यंत्र या सिद्धयंत्र या शांति (झल्लरी) यंत्र शांतिधारा के पश्चात् विराजमान करें। नूतन घर आदि स्थानों पर 'जिनवाणी' भी विराजमान कर सकते हैं।

6. सर्वप्रथम शुद्ध पवित्र जल से मंत्रोच्चारण करते हुए पात्र/शरीर/वस्त्र और भूमि शुद्धि मंत्र बोलकर करें।

7. मंडल पर 5 मंगल कलश और अष्टमंगल द्रव्य मंत्रोच्चारण पूर्वक स्थापित करें। मंगल कलश में हल्दी, सुपारी, पुष्प, अक्षत, पीली सरसों, सवा रुपया व चांदी का स्वस्तिक डालें और कलश के ऊपर श्रीफल सूती लाल/केशरिया वस्त्र से लपेट कर रखें।

8. मंडप को रक्षासूत्र से 3 बार लपेट कर (रक्षा नियोग मंत्र पढ़ते हुए) रक्षित करें तथा ज्योति स्थापन मंत्र पढ़कर दीपक आग्नेय दिशा में स्थापित करें। यदि ध्वजा उपलब्ध हो तो उत्तर या पूर्व दिशा में लगायें।

9. विधान के पात्रों को तिलक व स्त्री-पुरूष सभी के दाहिने हाथ में 3/5/7 बार मंत्रोच्चार पूर्वक रक्षासूत्र बांधे।

10. विधिपूर्वक अभिषेक, शांतिधारा करके मंगलाष्टक पढ़कर दिग्बंधन करके, रक्षा व शांतिमंत्र पढ़कर, विनयपाठ व मंगलपाठ का वाचन कर पूजा प्रारंभ करें। नित्यनियम पूजा करके विधान की पूजा प्रारंभ करें।

11. विधान की समाप्ति पर शांतिमंत्र की 1 माला का जाप लोंग (लवंग) / जातिपुष्प/ शुद्धधूप से करें। तदनन्तर महार्घ, शांतिपाठ, विसर्जन पाठ पढ़कर, अन्त में पंचपरमेष्ठी / भगवान शांतिनाथ की आरती करके, कोई शक्ति अनुसार नियम लेकर विधान को पूर्ण करें।

विधिपूर्वक किया गया विधान भव्यजीव के लिए सर्वसंकटहर, भव-भव में संचित पापकर्म की निर्जरा कर पुण्य कर्म का संचय कर स्वर्ग और परम्परा से मोक्ष प्राप्ति का अनुपम साधन है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विधान प्रशस्ति के अनुसार यह विधान मूलरूप में दि0 जैन मूलसंघ आम्नाय में सकलकीर्ति के शिष्य जिनदास कवि द्वारा संस्कृत भाषा में रचित है। यह कवि शांतिदास नाम से भी प्रसिद्ध थे। हिन्दी पद्यानुवाद स्व. पं. ताराचन्द जैन शास्त्री रेवाड़ी द्वारा रचित है। भक्तामर विधान सम्पूर्ण भारत वर्ष में हर जिनालय व श्रावकों के घरों में सर्वाधिक किया जाता है। इस विधान की भांति यह विधान भी सर्वत्र किया जाता है। इस विधान के करने में किसी को कोई असुविधा न हो, सभी श्रावक जन सरलता से कर सकें इसलिए इस विधान को आवश्यक दिशा निर्देशों का उल्लेख करते हुए सुधीव्रती श्रावक श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, वी-38, ग्रीन पार्क नई दिल्ली की प्रेरणा से प्रकाशित किया जा रहा है। उनकी अंतरंग भावना थी कि हर श्रावक अपने आप विधानाचार्य के विना ही यह पाठ कर सके-ऐसा विधान का सरल प्रकाशन होना चाहिये। उनकी भावना को साकार करने के लिए लघुप्रयास मेरे द्वारा किया गया है। मैंने अपनी योग्यतानुसार इस विधान को सरलतापूर्वक आपके सम्मुख प्रस्तुत किया है। यदि कहीं कोई त्रुटि रह गई हो तो पाठक गण मुझे सूचित करें, अगले संस्करण में उसका सुधार कर लिया जायेगा।

जिनधर्मरसिक
डॉ0 अशोक जैन गोयल शास्त्री, मंडावली
157, चन्द्र विहार, आई0पी0एक्स0
दिल्ली- 92, मोबाईल-9810509141

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष ध्यान देने योग्य जानकारी

दर्शन करते समय आवश्यक सावधानियाँ

1. देवदर्शन करने के पूर्व प्रातः उठकर इष्टदेव का स्मरण कर नौ बार णमोकार मंत्र का उच्चारण कर नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर शुद्ध व छने हुए जल से स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहिनकर प्रासुक सामग्री लेकर, ईर्यासमिति का पालन करते हुए जिनमंदिर जाना चाहिये।
2. मंदिर में घर के कपड़ों में वेदी का स्पर्श न करें, प्रसन्न मन व शांतचित्त होकर देवदर्शन करें।
3. स्तुति, पाठ एवं पूजा मध्यम स्वर में पढ़ें जिससे अन्य लोगों को व्यवधान न हो।
4. जिनेन्द्र देव को नमस्कार विनयपूर्वक पंचांग/अष्टांग या गवासन मुद्रा में करना चाहिये। भगवान के ठीक सामने खड़े होकर नमस्कार नहीं करना चाहिए व दर्शन करने वाले के सामने से न निकलें।
5. मंदिर में सांसारिक वार्तालाप कदापि न करें व मोबाइल आदि लेकर न जायें। वेदियों का दर्शन क्रम से ही करें। भगवान की ओर पीठ कर के वापिस नहीं लौटना चाहिये।

अभिषेक करते समय सावधानियाँ

1. घर के समस्त वस्त्र उतार कर, गीला तौलिया पहन कर , स्नान कर, शुद्ध धोती-दुपट्टा पहिनकर अभिषेक करें। सूर्योदय के बाद ही विधिपूर्वक मंत्रोच्चारण करते हुए शुद्ध प्रासुक जल से अभिषेक करना चाहिए। अभिषेक का कलश दोनों हाथों से पकड़े, सिर ढक्कर, तिलक लगाकर ही अभिषेक करें।
2. अभिषेक का जल दोहरे मोटे सूती वस्त्र से छानकर प्रासुक करके ही उपयोग में ले। जिस कलश से अभिषेक करना हो उससे हाथ न धोयें। हाथ धोने के लिए अलग से जल रखें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

3. वेदी से श्री जी उठाने के पूर्व 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें व दोनों हाथों से विनयपूर्वक प्रतिमाजी उठायें। पाषाण की प्रतिमाओं का गीले वस्त्र से मार्जन करना अधिक उपयुक्त है। वस्त्र को श्री जी के चरणों में रखकर अभिषेक न करें।

4. अभिषेक श्री जी के एकदम सामने से न करें व जल्दबाजी भी न करें। शांतचित रहकर कर्म से छुटकारा पाने की भावना निरन्तर भाते रहें।

5. अभिषेक के बाद प्रतिमा जी का मार्जन अच्छी तरह सूखे वस्त्र से करें। श्री जी के विराजमान होने के बाद भी मंत्रोच्चार पूर्वक गंधोदक उत्तमांग (मस्तक) पर लगायें।

पूजा व विधान संबंधी सावधानियाँ

1. पूजा प्रात:काल में शुद्ध वस्त्रों एवं शुद्धप्रासुक सामग्री से ही करें। पूजा व अभिषेक हमेशा सिर ढककर करें। पूजा जमीन पर खड़े होकर न करें। चटाई या आसन पर खड़े होकर या शक्ति न हो तो बैठकर ही पूजा करें।
2. थाली, ढोना व पूजा के बर्तनों में स्वस्तिक अंकित करें। मंदिर में दिशा भेद का अधिक महत्व नहीं है। शांत चित्त रखकर विधिपूर्वक पूजा व विधान करना चाहिए। अत्यन्त शीघ्रता से पूजन न पढ़े, इस प्रकार पढ़े जिससे पूजन का अर्थ भासित हो।
3. विपरीत परिस्थिति पूजन करते समय आ जाये तो मौन धारण करें, व्यर्थ का वार्तालाप करके कर्मबंधन न करें। पूजन व विधान बीच में छोड़कर इधर-उधर कहीं नहीं जाना चाहिए।
4. पूजा के सभी मंत्रों का उच्चारण शुद्धतापूर्वक करते हुए अष्टद्रव्य की सामग्री भावपूर्वक चढ़ायें।
5. पूजा व विधान की पुस्तक में से चावल आदि निकालकर विनयपूर्वक यथास्थान रखें।

जाप की सावधानियाँ

1. जाप आसन (डाभ का आसन अधिक उपयुक्त) पर बैठकर करें। जमीन पर बैठकर जाप न करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2. जापमाला को नाभि से नीचे नहीं ले जायें व बिस्तर पर बैठकर जाप माला नहीं फेरना चाहिए। हाथ-पैर धोकर शुद्ध वस्त्रों में माला करना चाहिये। माला को शुद्धता पूर्वक रखें व पूर्व या उत्तर में मुख करके जाप करें।
3. जाप मंत्र का पूर्ण उच्चारण स्मरण करके शांतिपूर्वक करें, अत्यधिक शीघ्रता व आकुलता पूर्वक जाप कदापि न करें।
4. जाप माला करने के पूर्व माला को विधिपूर्वक शुद्धि करके ही फेरना चाहिए। श्रावक का हाथ पर माला फेरना अधिक उपयुक्त नहीं है।
5. एक से अधिक माला करना हो तो मेरु के 3 दानों का उल्लंघन न करके जप पलटकर दूसरी माला करना चाहिये व मेरु के 3 दानों पर **''ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नमः''** इस मंत्र को 3 बार पढ़ना।

पूजन विधान करने वाले श्रावक की सामान्य पात्रता

1. अष्टमूलगुणधारी व सप्त व्यसन का त्यागी ही दर्शन-पूजा का पात्र है।
2. रात्रिभोजन व नशीली वस्तुओं के सेवन का त्यागी हो। सिगरेट, तम्बाकू, गुटका व मद्यपान आदि करने वाले पूजन का पात्र नहीं है।
3. पूजक भद्र परिणामी, दयालु, विनयवान व सदाचारी होना चाहिए।
4. कम से कम विधान के दिन पूजक को जमीकन्द आदि अभक्ष्य -भक्षण और रात्रिभोजन का त्यागी अवश्य होना चाहिये तथा ब्रह्मचर्यव्रत का धारी होना चाहिए।
5. श्रावक के लिए निर्माल्य द्रव्य का ग्रहण करना पाप है। निर्माल्य सेवन से बुद्धि भ्रष्ट होती है व नरक गति का बंध होता है।

निर्माल्य द्रव्य का ग्रहण पाप है

देव-शास्त्र गुरु के निमित्त जिस द्रव्य से स्व-स्वामी पन निकल गया है उसे निर्माल्य कहते हैं। इसके स्थूल रूप से दो भेद हैं।

1. जो द्रव्य देव-शास्त्र गुरु के निमित्त एवं अन्य किसी प्रकार के धर्मादा के लिए संकल्पित कर दिया है या दे दिया है, वह निर्माल्य द्रव्य है, जो श्रावक के उपयोग हेतु निषिद्ध है।
2. जो द्रव्य देवपूजा आदि में चढ़ा दिया गया है, वह निर्माल्य द्रव्य है, जो श्रावक के उपयोग हेतु निषिद्ध है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म हेतु दिये गये द्रव्य का उपयोग करने वालों के प्रति रयणसार ग्रन्थ में आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं-

जिणुद्धार-पदिट्ठा-जिणपूजा-तित्थवंदणऽ वसेसधणं।
जो भुंजइ सो भुंजइ जिणदिट्ठं णिरयगई दुक्खं।।

अर्थ : श्री जिनमंदिर का जीर्णोद्धार, जिनबिम्ब प्रतिष्ठा, मंदिर प्रतिष्ठा, जिनेन्द्र पूजा, जिनयात्रा, रथोत्सव और जिनशासन के आयतनों की रक्षा के लिए प्रदान किये गये दान को जो मनुष्य लोभवश ग्रहण करते हैं और अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं, वे मनुष्य नरकगामी होते हैं। ऐसा जिनेन्द्र भगवान ने कहा है।

जिनमंदिर के जीर्णोद्धार हेतु प्राप्त द्रव्य को अपने उपयोग में लेना, जीर्णोद्धार हेतु आए हुए सामान (बल्लियाँ, रस्से, गैंती, फावड़ा आदि) को निजी उपयोग में लेना अथवा पदाधिकारी होने के नाते अपने इष्ट मित्रों व संबंधियों को दे देना, जीर्णोद्धार हेतु बोला गया रुपया वर्षों तक नहीं देना, दान के पैसे स्वयं हड़प जाना या कम जमा कराना या उससे अपना व्यवहार कार्य चलाना आदि अनेक ऐसे कार्य हैं जिनका फल दुर्गतिमात्र है।

जिनेन्द्र पूजा में समर्पित द्रव्य का स्वयं भक्षण करने से अन्तराय कर्म का बंध होता है। धार्मिक अनुष्ठान में दी गई राशि का उपभोग यदि प्राणी स्वयं के कार्य में या भोग विलास के साधनों में या अन्य लौकिक कार्यों में करता है तो उसे पाप कर्म का बंध व नरकगति का पात्र बनना पड़ता है। रयणसार ग्रन्थ में लिखा है-पूजा दान आदि संबंधी द्रव्य को लेने वाले व्यक्ति स्त्री-पुत्रादि से रहित हो जाते हैं तथा दरिद्र, पंगु, मूक, बधिर, अंधे और चांडालादि नीच पर्यायों में उत्पन्न होते हैं। अतः मंदिर की सम्पदा का उपयोग स्वयं के लिए सर्वथा निषिद्ध है।

धर्मादा द्रव्य का उचित उपयोग करने से मनुष्य समृद्ध और वैभव सम्पन्न बनता है किन्तु यदि उसी द्रव्य का स्वयं उपभोग करने लगे तो उसकी सम्पत्ति को क्षय रोग लग जाता है। न्यायनीति से उपार्जित धन का 10 प्रतिशत भाग यदि श्रावक दान आदि में नहीं लगाता और स्वयं उसका (अर्थात् 10 प्रतिशत जो दान देने के लिए था) उपभोग करता है तो वह द्रव्य भी निर्माल्य है, वह भी ग्रहण योग्य नहीं है। साधु के आहार बिना आहारदान में आये पदार्थों को स्वयं ग्रहण करना (सूक्ष्मता से) भी निर्माल्य है। बोली की रकम से ब्याज कमाना, दान दी गई राशि से व्यापार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करना, दुकान पर प्रतिदिन धर्मादा निकाल कर जमा करते जाना पश्चात, उसी द्रव्य से कलश आदि चढ़ाने की बोली ले लेना तथा ग्राहकों से धर्मादा ले लेना पश्चात् उसे अपने नाम से देना, मंदिर की दुकान-मकान आदि सम्पत्तियों पर अपना अधिकार करना या कम किराया देना या देना ही नहीं, दाता की रसीद पर फेरफार कर देना आदि अनेक छलप्रपंच जीव के दुर्गति के कारण हैं। दुष्कृत्य से श्रावक का वंश निर्जीव बन जाता है।

सभी पापों में भयावह पाप धर्मादाद्रव्य ग्रहण है। यह पाप आशीविष सर्प, अग्नि और हलाहल विष से भी भयंकर है। कहा भी है-

देवस्वं तु विषं लोके, न विषं विषमुच्यते ।
विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रिकम् ।।

अर्थ - लोक में जिसे विष कहा है, यथार्थ में वह बड़ा विष नहीं है, क्योंकि उस विष के भक्षण करने से एक (भक्षण करने वाले) का ही घात होता है। बड़ा विष तो देवद्रव्य अर्थात् धर्मादा का द्रव्य है, जिसका भक्षण स्वयं के साथ-साथ पुत्र -पौत्रादि कुटुम्ब के घात का कारण है और नरकादि दुर्गति का कारण है।

अतः प्रत्येक श्रावक को इस महापाप से शीघ्र ही छुटकारा पाकर जिनशासन की शरण लेकर रत्नत्रय की साधना कर मुक्तिप्राप्ति की भावना साकार करना चाहिये।

-सम्पादक

-दान देने योग्य सात प्रमुख स्थान-

"जिनप्रतिमा, जिनमंदिर, तीर्थ यात्रा, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, आहारादि दान, जिनेन्द्र पूजा और जिनागम प्रकाशन।"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवश्यक मंत्र

ज्योति स्थापना मंत्र

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

ध्वजा आरोहण का मंत्र

ॐणमो अरहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु सर्वलोकस्य शान्तिर्भवतु स्वाहा।

जलशुद्धि - मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्म तिगिञ्छकेसरि महापुण्डरीक पुण्डरीकगंगासिन्धु रोहिद्रोहितास्यस्या हरिद्धरिकान्ता सीतासीतोदा नारीनरकान्ता सुवर्ण रूप्यकूलारक्तारक्तोदाः पयोधिशुद्धजलसुवर्णघटप्रक्षालित नवरत्नगंधाक्षत पुष्पार्चितममोदकं श्रौं श्रौं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां हं सः इति मंत्रेण प्रसिंच्य जलपवित्रीकरणम्।

शुद्धि- मन्त्र

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत - वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय
सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।
(सभी पात्र दाहिनी चुल्लू में जल लेकर मंत्रित जल के छीटें से शुद्धि करें।)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि।
(दाहिनी चुल्लू में जल लेकर पूजा के सभी बर्तन मंत्रित जल के छीटें लगाकर शुद्ध करें।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्य शुद्धि – मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं झौं झौं वं मं हं सं तं पं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्ततीर्थपवित्रजलेन शुद्धपात्रे निक्षिप्त पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

तिलक मन्त्र

पात्रेऽर्पितं चन्दनमौषधीशं, शुभ्रं सुगन्धाहृतचञ्चरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं, न केवलं देहविकारहेतोः।।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वांगशुद्धिं कुरु कुरु।
(नव स्थानों पर तिलक करें)।

रक्षानियोग मंत्र

(मंडप पर रक्षासूत्र लपेटें)

ॐनमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

भूमिशुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्रीं भूः स्वाहा।

दिग्बन्धन – मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं पूर्व दिशातः समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट स्वाहा।
(बंद मुट्ठी से पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं दक्षिण दिशातः समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
(बंद मुट्ठी से दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं पश्चिम दिशातः समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष हूं फट् स्वाहा।
(बंद मुट्ठी से पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं उत्तर दिशातः समागत विघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं सर्व दिशातः समागत विघ्नान् नवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से सभी दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें)

रक्षा-मन्त्र

ॐ ह्रूं क्ष्ूं फट् किरिटं किरिटं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमंत्रान् भिन्द भिन्द क्षांः क्षः वाः वाः ह्रूं फट् स्वाहा।

(स्वयं के ऊपर पुष्प क्षेपण करें)

शान्ति-मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृच्छुद्रोपद्रव- नाशनाय सर्वक्षामरडामर-विनाशनाय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

(विश्वशान्ति की कामना के साथ सभी दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री शान्तिनाथ पूजाविधान माण्डला

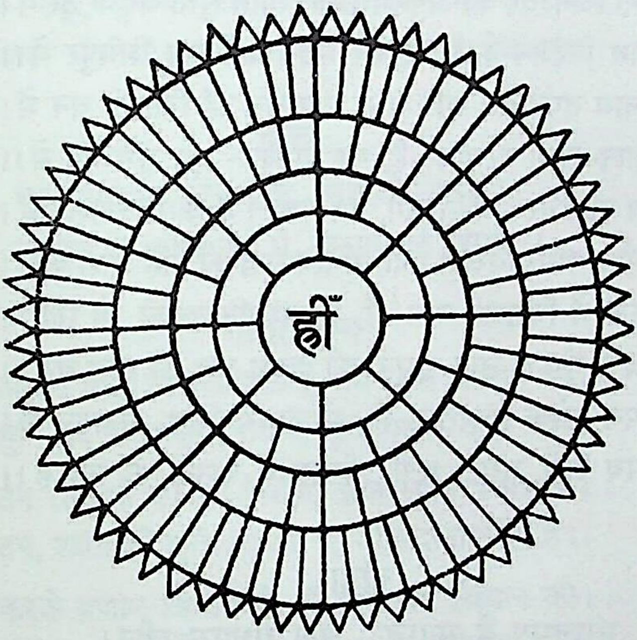

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री जिनदास कवि प्रणीत

श्री शान्तिनाथ पूजा विधान

का

हिन्दी में पद्यानुवाद

(पं. ताराचंद जैन शास्त्री, रेवाड़ी, हरियाणा)

मंगलाचरण

(शम्भु छन्द)

अरिहन्त जिनेश्वर की अनुपम छवि, शांति सुधा धर के उर में।
शिवनाथ निरंजन कर्मजयी बन, जाय बसे प्रभु शिवपुर में।।
मुनि-नाथ तपोनिधि सूरि सुधी, तपलीन रहें नित ही वन में।
श्रुत-ज्ञान-सुधा बरसावत हैं, गुरु पाठक - वृंद सुभव्यन में।।
रत्नत्रय की चिर-ज्योति जगे, तप-ज्वाल में कर्म विनाश करें।
भव-भोग-शरीर विरक्त सदा, इन्द्रिय सुख की नहिं आश करें।।
गंध कुटी में विराजत नाथ! हैं, दिव्यध्वनि उनकी जो खिरी।
गणराज ने गूंथ के ज्ञान-प्रसून, की द्वादश अंग की माल वरी।।
मंगलमय लोक जिनोत्तम हैं, मंगलमय सिद्ध सनातन हैं।
मंगलमय सूरि सुवृत्त धनी, मंगलमय पाठक के गन हैं।।

दोहा

मंगलमय हैं साधुजन, ज्ञान सुधारस लीन।
जिनप्रणीत वर धर्म है, मंगलमय स्वाधीन।।
सब द्वीपों के मध्य में, जंबू-द्वीप अनूप।
लवण नीर-निधि सर्वतः, जहां खातिका रूप।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोरठा

जहां धातकी द्वीप, वलयाकार समुद्र के।
आधा पुष्कर द्वीप, कालोदधि समुद्र के।।
ढाई द्वीप में तीन काल के, असंख्यात जिनराज।
वंदनीय जो तीन लोक में, वंदू धर्म जहाज।।

शम्भु छन्द

चन्द्रकला सम ज्योति मनोहर, अंग जिनेश की राजत है,
पद्म पुनीत प्रभा सम उज्ज्वल, देह प्रभु की विराजत है।
कंठ- मयूर, सुकंचन नीरद, तुल्य जिनेन्द्र की अंग प्रभा,
तीर्थेश्वर चौबीस अलौकिक रूप-विमुग्ध है देव-सभा।।

दोहा

भूत भविष्यत वर्तमान के, चौबीसों जिनराज।
रत्नत्रय से भूषित जग में, अनुपम रहे विराज।।

गीता छन्द

अरहंत सिद्ध त्रिलोक पूजित, धर्म ध्वज आचार्य को।
मुनि वृंद के शिक्षा प्रदायक, पूज्य पाठक आर्य को।।

उन साधुओं को जो निरंतर, ज्ञान ध्यान प्रवीण हैं।
तप, शांति की शुचि साधना में, जो सदा तल्लीन हैं।।

करके प्रणाम त्रियोग से, मैं शांतिनाथ विधान को।
प्रारंभ करता हूँ, बढ़ाने भक्ति श्रद्धा ज्ञान को।।

लोक के सब गणधरों को, भक्ति श्रद्धा भाव से।
कुंदकुंदादि दिंगबर मुनिवरों को चाव से।।

करता प्रणाम इसीलिए कि, धर्म की हो नित विजय।
निर्विघ्न हो यह पाठ पूरा, है यही मेरी विनय।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा

शांतिनाथ भगवान के, गुण हैं अपरंपार।
वाचस्पति वर्णन करें, तो भी पाएं न पार।।

गीता छन्द

यह शांतिनाथ-विधान किसने, कब कहाँ क्यों कर लिया?
फल प्राप्ति जो उसको हुई, नर -भव सफल उसने किया।।
वृत्तांत उसका मैं प्रसंग-सहित यहाँ वर्णन करूँ।
कल्याण हो, सुनकर जगत का ध्यान यह मन में धरूँ।।

शम्भु छन्द

भरत क्षेत्र के आर्य खंड में, भारत भू विख्यात सुदेश।
मथुरा प्रांत, वहाँ का शासक, सूर्य वंश का तिलक नरेश।।

राजनीति में निपुण न्याय प्रिय वीर, प्रजा का पालक था।
साम, दाम और दंड भेद युत, शासन का संचालक था।।

एक बार जब दैवयोग से, दुर्विपाक ने किया प्रकोप।
ग्राम देवता ने क्रोधित हो, किया उपद्रव, शांति विलोप।

महा भयंकर व्याधि विषम, अति फैलाई किन्नर ने।
दिन प्रतिदिन अति प्रबल वेग से, लोग लगे तब मरने।।

रोग प्रपीड़ित जनता, नृप ने, छोड़ी मथुरा नगरी।
काल कृपाण लिए लख भारी, जनता भागी सगरी।।

शुक्ल त्रयोदशी के दिन सहसा, सेठ सुमति तहँ आए।
मेघ सुवर्षा देख मनोरथ, मन में अति हर्षाए।।

मथुरा नगरी में प्रवेश कर, देखे नहीं नर नारी।
सूनी नगरी देख सुमति तब, मन में व्याकुल भारी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देख जिनालय, पूज जिनेश्वर, मुनि नायक युग वन्दे।
दर्शन वन्दन भक्ति विनय युत, कर उर अति आनन्दे।।

प्रश्न किया तब सेठ सुमति ने, नाथ उपाय बताएँ।
होगी शांति मुनीश्वर कैसे? व्याधि विघन नश जाएँ।।

चारण ऋधि के धारी, मुनीश्वर, बोले वचन सुखदाई।
शांतिनाथ जिन शांति विधायक, पूज रचो हर्षाई।।

मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीशांतिनाथाय सकलविघ्नहराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अमुकस्य[1] सर्वोपद्रव शांति लक्ष्मी लाभं च कुरु कुरु नमः (स्वाहा)

(1. स्वयं जपते समय 'अमुकस्य' के स्थान पर 'मम' का उच्चारण करें। अथवा विधानाचार्य विधानकर्ता का नाम उच्चारण करें। यह जप प्रतिदिन 108 बार या 9 बार करने से मन को शांति मिलती है।)

–मंत्र व विधान का महत्त्व–

इस मंत्रराज के जपने से, मन शांत शुद्ध हो जाता है।
विघ्न सभी होते विनष्ट हैं, पुण्य कोष भर जाता है।।
धन संपत्ति अधिकार का मिलना, यह तो है साधारण बात।
उर मंदिर में ज्ञान सूर्य का, होता उज्ज्वल दिव्य प्रभात।।
इसका विधि विधान है भव्यो, सुनो चित्त को कर अम्लान।
शुक्ल पक्ष के प्रथम दिवस से, सोलह दिन तक करो विधान।।
जिनपूजा के पूर्व यंत्र की, पूजा संस्थापन शुभ कार्य।
सहस मंत्र का जाप करो नित, षोडस दिन तक सुमति सुआर्य।।
पूजा के मंगल विधान में, दीप धूप फल पुष्प सुगंध।
भक्ति भाव युत नित्य समर्पित, अशुभ कर्म हों जिससे मंद।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ पूजा प्रारभ्यते

स्थापना छन्द

हे शांति प्रभो! हे शांति प्रभो, मेरे मन-मंदिर में आओ।
पापों के विनाशन हेतु प्रभो, निज शांति छवि शुभ दर्शाओ।।
कर्मों के बंधन खुलते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा जपने से ।।
भव -भोग-शरीर विनश्वर तब, क्षण भंगुर लगते सपने से।।
नर जन्म सफल यह होता है, जब ध्यान तुम्हारा आता है।
निज रूप में लीन हुआ प्रभु। वह, भव-सागर से तर जाता है।।

ॐ ह्रीं शांतिनाथ सर्वकर्मबंधनविमुक्त सकलविघ्नशांतिकर संपूर्णोत्तम हे पंचम चक्रेश्वर ! अत्रावतर अवतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ॐ ह्रीं शांतिनाथ सर्व कर्मबंधनविमुक्त संपूर्णोत्तम मंगलप्रद ! हे द्वादश कामदेवेंद्र ! अत्र तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्) ।
ॐ ह्रीं शांतिनाथ सर्वकर्मबंधनविमुक्त संपूर्णोत्तम मंगलप्रद ! हे षोडशोत्तम तीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।।

श्री शांतिनाथ स्तवन

गीताछन्द

संसार सागर में भटकते , प्राणियों को हे प्रभो!
आपके युग चरण ही तो, शरण दे सकते विभो!

दावाग्नि दुख संताप की, सर्वत्र ही तो जल रही।
मन-मोह -माया ही निजातम, को यहाँ पर छल रही।।

क्रोधित भुजंगम के डसे, बहु प्राणियों के गात्र में।
गारुड़ी विद्या प्रशम करती यथा क्षण मात्र में।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु आपके चरणांबुजों का, ध्यान करते भक्ति से।
सब विघ्न बाधाएँ विलय, होतीं निजातम शक्ति से।।

तप्त स्वर्ण के तुल्य आपके, दिव्य चरण का निर्मल ध्यान।
भव--सागर में पड़े प्राणियों, के सुपार हित बनता यान।।

यामिनी के घन-तिमिर में लुप्त भू आलोक हो।
उद्यद्दिवाकर रश्मियाँ, करतीं प्रकाशित लोक को।।

जब तक नहीं होता उदय, रवि-रश्मि का संसार में।
तब तक कमलश्री सुप्त रहती, है सतत कासार में।।

जब तक नहीं होती कृपा, भगवान के युग चरण की।
जब तक नहीं है, टूटती, जंजीर जीवन-मरण की।।

लोक अलोक विलोकन में, परिपूर्ण समर्थ जिनेंद्र प्रभो।
त्रय छत्र छटा रवि तुल्य अनूप, विराजित ज्ञान के पुंज विभो।।

पद पंकज के गुणगान पुनीत से, पाप पलायन हो क्षण में।
दर्पान्ध मृगेन्द्र के भीम निनाद से, वन्य गजेन्द्र भगे रण में।।

प्रत्यूष बेला के ललित, उज्ज्वल दिवाकर सा विमल।
नाथ का प्रभामण्डल, ज्यों सोहता स्वर्णिम कमल।।

दिव्यांगनाओं के प्रफुल्लित, नयन मन को मोहता।
त्रैलोक्य के तम-तोम को, करता विदूरित सोहता।।

बाधा रहित शाश्वत निराकुल, अन्यतम सुख संपदा।
नाथ के चरणारविदों के समागम में सदा।

प्राप्त करते भक्त जन हैं, भक्ति के आधार से
आश्चर्य क्या यदि पार हों, संसार पारावार से।।

हे शांतिनाथ जिनेंद्र तव, चरणारविदों की कृपा।
भव दु:ख से संतप्त जन के, हेतु बन जाती प्रपा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूर होते दुःख -दारुण, नाथ की शुभ भक्ति से।
ज्यों घन तिमिर है दूर होता, रवि किरण की शक्ति से।।

श्री शांतिनाथ जिनेंद्र के इस संस्तवन को भाव से।
जो भव्य जन पढ़ते निरंतर, हैं विनय से चाव से।।

परिणाम उनके हों विमल, सब विघ्न बाधाएं टलें।
कल्याण मंदिर के पथिक वे, मुक्ति के पथ पर चलें।।

अष्ट द्रव्य से पूजन

स्वर्ण कलश में जल ले जो नित जिन पद पूजन करते हैं।
वे निश्चय ही राजतिलक की अतुल संपदा वरते हैं।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चंदन अरु कपूर से श्री जिन चरणों का अर्चन।
करते हैं जो भव्य स्वर्ग में सुरभित होते उनके तन।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के चरण कमल की पूजा, निर्मल अक्षत से करते।
कामदेव सा रूप, निरोगी, दीर्घ आयु जीवन धरते।।

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बकुल चमेली कुन्द मल्लिका से प्रभु पद पंकज पूजन।
करते, पुरुषोत्तर विमान में लेकर जन्म सफल जीवन।।

ॐ रां रीं रूं रौं रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उज्ज्वल स्वर्णपात्र में लेकर, जो घृतान्न नैवेद्य विमल।
अर्पित करते प्रभु पद में वे,पाते कल्पवृक्ष के फल।।

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

(वसंततिलक छंद)

कर्पूरनिर्मित समुज्जवल दीप द्वारा, भगवज्जिनेन्द्र प्रभु की शुभ आरती से।
होता विभूषित सुजन्म परत्र उनका, कैवल्य ज्योति उद्भासित भारती से।।

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर चंदनविनिर्मित धूप द्वारा, अर्हज्जिनेंद्र प्रभु की शुभ अर्चना से।
सौंदर्य भूषित शरीर निरोग उनको, मिलता अवश्य प्रभु पद वंदना से।।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

श्रीफल कदलीदल रसाल ले, श्रीजिन चरणों की पूजन ।
मनवांछित फल दिव्य स्वर्ग के पाते, जो करते भविजन।।

ॐ खां खीं खूं खौं खः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्य का अर्घ विमल ले, शांतिनाथ प्रभु का पूजन।
करते हैं जो भव्य शतेंद्रों से वंदित हो दिव्य चरण।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ स्तवनम्

शम्भु छन्द

ज्ञान रूप ॐकार नमस्ते, ह्रीं मध्ये प्रभु शांति नमस्ते।
वीतराग अर्हंत नमस्ते, दयाधर्म परिपूर्ण नमस्ते।।

एकानेक स्वरूप नमस्ते, श्रीमच्चक्राधीश नमस्ते।
शांतिदीप्ति शिव रूप नमस्ते, ज्ञानगर्भ निज रूप नमस्ते।।

नानाभाषात्मने नमस्ते, आशापाश विहीन नमस्ते।।
पावन गुण गण गीत नमस्ते, अष्ट कर्म विध्वस्त नमस्ते।।

तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, पर संकल्प विहीन नमस्ते।
मुक्तिवधू के कंत नमस्ते, सम्यक् चारित दक्ष नमस्ते।।

आत्मस्वभावे लीन नमस्ते, रत्नत्रय संयुक्त नमस्ते।
आत्मबोधि परिपूर्ण नमस्ते, इहपरत्र सुख दातृ नमस्ते।।

करुणा सागर नाथ नमस्ते, वाणी विश्वहिताय नमस्ते।।
शांतिनाथ परमेश नमस्ते, तीव्र गरल हर दक्ष नमस्ते।

कुरुवंशे अवतंस नमस्ते, ऋषि चित हर्षित करन नमस्ते।।
कुलक्रमभृते जिनेंद्र नमस्ते, सदा विचित्र स्वरूप नमस्ते।

ह्रीं बीजे शायिने नमस्ते, धीर वीर भुवनेंद्र नमस्ते।।
विघ्न विनाशक शांति नमस्ते, प्राणनाथ तव नाम नमस्ते।

भयहर्त्ता निर्भीक नमस्ते, दिव्यध्वनि शिव सत्य नमस्ते।।
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, कैवल्ये निज लीन नमस्ते।

शांति जिनाष्टक को जो भविजन, धारे नित्य हृदय में।।
सुख संपति ऐश्वर्य सहित हो, संशय नाहिं विजय में।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय जगतशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्पमीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम वलय पूजा प्रारम्भ

(प्रथम वलय में 8 अर्घ्य प्रतिहार्य व बीजाक्षर से संबंधित है। मंडप पर प्रथम वलय में बादाम/ श्रीफल प्रत्येक अर्घ्य पर समर्पित करें)

प्रथम वलयाष्टकोष्ठोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्
(प्रथम वलय पर चारों ओर पुष्प क्षेपण करें।)

स्ववर्गोपगतां पीडां क्षराग्निं बिंदु षट् स्वरं।
हं बीजेन प्राहुः स्वघ्नं शांतिनाथं नमाम्यहं।। 1 ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय अशोक तरु सत्प्रातिहार्यमंडिताय अशोक तरु युक्त शोभनपद प्रदाय हम्ल्व्यूँ बीजाय सर्वोप्रदव शांतिकराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववर्गोपगतां पीडां क्षराग्निं बिन्दु षट्स्वरं।
भं बीजेन प्राहुः स्वघ्नं शांतिनाथं नमाम्यहं।। 2 ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सुरपुष्प वृष्टि शोभन पद प्रदाय भ्म्ल्वयूँ बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववर्गोपगतां पीड़ां क्षराग्निं बिंदु षट् स्वरं।
मं बीजेन प्राहुः स्वघ्नं शांतिनाथ नमाम्यहं।। 3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्यमंडिताय दिव्यध्वनि शोभनपद प्रदाय मम्ल्वयूँ बीजाय सर्वोप्रदवशांतिकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववर्गोपगतां पीड़ां क्षराग्निं बिंदु षट् स्वरं।
रं बीजेन प्राहुः स्वघ्नं शांतिनाथं नमाम्यहं।। 4 ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय चामरोज्जवल सत्प्रातिहार्यमंडिताय शोभनपद प्रदाय रम्ल्वयूँ बीजाय सर्वोपद्रवशंतिकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्ववर्गोपगतां पीड़ां क्षराग्निं बिंदु षट् स्वरं।
घं बीजेन प्राहु: स्वघ्नं शांतिनाथं नमाम्यहं।। 5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्यमंडिताय सिंहासन सत्प्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय घ्म्ल्व्यूँ बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववर्गोपगतां पीड़ां क्षराग्निं बिंदु षट् स्वरं।
झं बीजेन प्राहु: स्वघ्नं शांतिनाथं नमाम्यहं।। 6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय भामंडलसत्प्रातिहार्यमंडिताय भामंडलप्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय झ्म्ल्व्यूँ बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववर्गोपगतां पीड़ां क्षराग्निं बिंदु षट् स्वरं।
सं बीजेन प्राहु: स्वघ्नं शांतिनाथं नमाम्यहं।। 7 ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय दुंदुभिसत्प्रातिहार्यमंडिताय दुंदुभिप्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय स्म्ल्व्यूँ बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्ववर्गोपगतां पीड़ां क्षराग्निं बिंदु षट् स्वरं।
खं बीजेन प्राहु: स्वघ्नं शांतिनाथं नमाम्यहं।। 8 ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय छत्रत्रयसत्प्रातिहार्यमंडिताय छत्रत्रयशोभनपद प्रदाय सर्वविघ्नहराय ख्म्ल्व्यूँ सर्वोपद्रवशांतिकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हभमरघझासखान् बीज वर्णान् विधानत:।
प्रलयं यांतु विघानौघ स्तोमेनार्ध्येण संयजे।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय प्रातिहार्याष्टसहिताय बीजाष्टमंडनमंडिताय सर्वविघ्नशांतिकराय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ द्वितीय वलय पूजा

मंत्र- ॐ ह्रीं श्री षोडशकारणभूत जिनपूजनाय देवेंद्रागच्छसन्
परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(द्वितीय वलय में त्रिकालवर्ती पंचपरमेण्ठी, रत्नत्रय एवं अष्टकर्म विनाशक भगवान के लिए अर्घ्य समर्पित है। द्वितीय वलय में चारों ओर पुष्पक्षेपण करें)

भक्ति भाव युत, प्रभु पूजन को इन्द्र जिनालय आवें।
तीर्थंकर पदवी के कारण श्री जिन के गुण गावे।।
श्री जिन प्रभु के पद पंकज की पूजा इंद्र रचावें।
दर्शन ज्ञान अनंत सुखामृत बल विक्रम वे पावें।। 1।।

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैवतविदेहादिशतैक सप्ततिर्क्षेत्रार्य खंडे भूत भविष्यत् वर्तमानार्हत्परमेष्ठिपदपंकजे सन्मतितद्भक्त्युपेतामलरत खंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म से मुक्त, निरंजन सिद्ध स्वरूपी राजें।
क्षायिक सम्यक् आदि गुणोत्तम, सीमातीत विराजें।।
भूत भविष्यत वर्तमान के, सिद्ध अनंत निरंजन।
निज स्वरूप में लीन प्रभु की, करता पूजन वंदन।। 2 ।।

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावत विदेहादिशतैकसप्तति क्षेत्रार्यखंडे भूत भविष्यत्वर्तमानसिद्धपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मति सद्भक्त्यु पेतामलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार विभूषित गुरुवर, आतम ज्योति जगावें।
ज्ञान तपोनिधि, कर्म दलन को ध्यान कुठार उठावें।।
शांति सुधाकर की शुचि शीतल, रश्मि प्रकाश प्रसारें।
संघ चतुर्विध के अधिनायक, काम महारिपु मारें।। 3 ।।

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैकसप्ततिर्क्षेत्रार्य खंडे भूत भविष्यत्वर्तमानआचार्यपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मति सद्भक्त्यु पेतामलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वादशअंग विभूषित मुनिवर, पाठक साधु सुधी के।
मान विमिर्दन करते निर्मद, गर्वित वादि कुधी के।।
ध्यानाध्ययन निरंतर जिन के, शिवसाधन दर्शावें।
इष्टानिष्ट संयोगवियोगे, हर्ष विषाद न लावें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैकसप्ततिर्क्षेत्रार्य खंडे भूतभविष्यत्वर्तमानपाठकपरमेष्टिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्यु पेतामलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान तपलीन निरंतर, समता स्वादक योगी।
विषयातीत स्वरूप जितेंद्रिय, आतम रस के भोगी।।
ध्यानकृपाण लिए मुनियोगी, कर्म महारिपु मारें।
गुणश्रेणी युत कर्म निर्जरा, जिन गुण रूप विचारें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैकसप्ततिर्क्षेत्रार्य खंडे भूत भविष्यत्वर्तमान सर्वसाधुपरमेष्ठि पदपंकजे सन्मति सद्भक्त्यु पेतामलतरखंडोज्सित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पच्चीस दोषों से रहित, अष्टांग सम्यक् दर्शनम्।
अर्हंत आगम गुरुवरों को, मैं करूं नित अर्चनम्।।6।।

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्ध सम्यकत्वामलतरखंडोज्झितनिदान बंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग जिनेंद्रवाणी, ज्ञान दोष विवर्जितम्।
सम्यग्विभूषित आत्म ज्योति को करूं मैं वंदनम्।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यग्ज्ञानामलतरखंडोज्झितनिदान बंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्तियां त्रय, समिति पाँचों, और पंच महाव्रतम्।
तेरह प्रकार चरित्र सम्यक् का करूं मैं पूजनम्।।8।।

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यक्त्वचारित्रामलतरखंडोज्झित निदानबंधनाय कृतेज्याय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानावरणी पंच प्रकृति हैं, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शांति जिनेश दया के सागर, पूंजूँ पद अविनाशी।। 9 ।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानावरणमहाबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनावरणी कर्म प्रकृति नव, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शांति जिनेश दया के सागर, पूजूं पद अविनाशीं।।10।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनावरण कर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवो पद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय विधि सुख-दुख द्वै विधि, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शांति जिनेश दया के सागर, पूजूं पद अविनाशी।।11।।

ॐ ह्रीं श्री वेदनीयकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टाविंशति प्रकृति मोह की प्रभु ने सर्व विनाशी।
शांति जिनेश दया के सागर, पूजूं पद अविनाशी।।12।।

ॐ ह्रीं श्री प्रचंडमोहनीयकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवो पद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आयुकर्म की प्रकृति चार हैं, प्रभु ने सर्व विनाशी।
शांति जिनेश दया के सागर, पूजूं पद अविनाशी।।13।।

ॐ ह्रीं श्री आयुकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म की प्रकृति नवतित्रय प्रभु ने सर्व विनाशी।
शांति जिनेश दया के सागर, पूजूं पद अविनाशी।।14।।

ॐ ह्रीं श्री नामकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद् भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोत्र कर्म की प्रकृति शुभाशुभ प्रभु ने सर्व विनाशी।
शांति जिनेश दया के सागर, पूजूं पद अविनाशी।।15।।
ॐ ह्रीं श्री गोत्रकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय विधि पंच प्रकृति हैं प्रभु ने सर्व विनाशी।
शांति जिनेश दया के सागर, पूजूं पद अविनाशी।।16।।
ॐ ह्री श्री अंतरायकर्मबंधबंधनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चरित से भूषित पंच परम पद पाऊं।
शांतिनाथ जिन के चरणों में नित प्रति अर्घ चढ़ाऊ।।
ॐ ह्री श्री पंचपरमेष्ठिपददायक दर्शनज्ञानचारित्रकारक कर्माष्टकनिवारक श्री शांतिनाथायषोडशांक द्वितीयवलयमध्ये पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अथ तृतीय वलय पूजा

(तृतीय वलय में 32 इन्द्रों द्वारा (भवनवासी के 10, व्यंतर के 8, ज्योतिषी के 2 और वैमानिक के 12 इन्द्रों द्वारा) भ. शांतिनाथ की आराधना की गई है।)

भवनवासी व्यंतरों के, ज्योतिषी स्वर्गान्त के।
आहूत इस जिन यज्ञ में, इंद्रादि सब कल्पान्त के।।
(ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत देवेन्द्रागच्छत सन् परिपुष्पांजलिं क्षिपेत)

निज परिवार सहित असुरों के इंद्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।1।।
ॐ ह्रीं श्री असुरेंद्रकुमारेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज परिवार सहित धरणी के,इंद्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री धरणेंद्रकुमारेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित सुपर्ण के, इंद्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सुपर्णकुमारेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित द्वीपों के, इंद्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री द्वीपेंद्रकुमारेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित सागर के, इंद्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री उदधीन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिनानाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित स्तनितों के, इंद्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री स्तनितेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित विद्युत के, इंद्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 7।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युत्कुमारेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज परिवार सहित दिक्सुर के, इंद्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री दिक्कुमारेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित मारुत के, इंद्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अग्नींद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित मारुत के, इंद्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।10।।

ॐ ह्रीं श्री वातकुमारेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित किन्नर के, इंद्र जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।11।।

ॐ ह्रीं श्री किन्नरेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

किंपुरुषों के इंद्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शंति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।12।।

ॐ ह्रीं श्री किंपुरुषेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

महोरगों के इंद्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।13।।

ॐ ह्रीं श्री महोरगेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गंधर्वों के इंद्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा इंद्र रचावें।।14।।

ॐ ह्रीं श्री गंधर्वेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

यक्षसुरों के इंद्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।15।।

ॐ ह्रीं श्री यक्षेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षस गण के इंद्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।16।।

ॐ ह्रीं श्री राक्षसेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भूत सूरों के इंद्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा इन्द्र रचावें।।17।।

ॐ ह्रीं श्री भूतेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुर पिशाच के इंद्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा इंद्र रचावें।।18।।

ॐ ह्रीं श्री पिशाचेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिषियों के इंद्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।19।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्योतिषदेव-प्रतींद्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद -पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।20।।

ॐ ह्रीं श्री भास्करेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्म स्वर्ग के इंद्र, सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।। 21।।

ॐ ह्रीं श्री सौधर्मेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ईशान स्वर्ग के इंद्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की,पूजा नित्य रचावें।।22।।

ॐ ह्रीं श्री ईशानेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सनत स्वर्ग के इंद्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा इंद्र रचावें।।23।।

ॐ ह्रीं श्री सनतकुमारेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र स्वर्ग के इंद्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।24।।

ॐ ह्रीं श्री माहेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म स्वर्ग के इंद्र सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।25।।

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लान्तवेंद्र स्वर्गांत सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।26।।

ॐ ह्रीं श्री लांतवेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र स्वर्ग के इन्द्र सहित परिवार जिनालय आवे।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।27।।

ॐ ह्रीं श्री शुक्रेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निवपामीति स्वाहा।

शतारेंद्र शुभ भाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद -पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।28।।

ॐ ह्रीं श्री शतारेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आनतेंद्र शुभ भाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।29।।

ॐ ह्रीं श्री आनतेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेंद्र शुभ भाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।30।।

ॐ ह्रीं श्री प्राणतेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिनाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेंद्र शुभ भाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।31।।

ॐ ह्रीं श्री आरणेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अच्युतेंद्र शुभ भाव सहित, परिवार जिनालय आवें।
शांति प्रभु के पद-पंकज की, पूजा नित्य रचावें।।32।।

ॐ ह्रीं श्री अच्युतेंद्र स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तीस इंद्रों से प्रपूजित शांति नाथ जिनेश को।
परिपूर्ण अर्घ चढ़ाय पाऊं, हे प्रभो! शिवलोक को।।33।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्णिकायदेवेंद्र पूजित श्रीशांतिनाथाय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के सभी देवता, आए जो प्रभु अर्चन को।
आदर सहित पधारें अब वे जिनपूजा कर निज पुर को।।34।।

ॐ ह्रीं श्री सकल देवता साधित श्रीशांतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय पूजा प्रारंभ

अथ चतुःषष्टि कोण्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत।

अर्थात् चतुर्थ वलय में चारों ओर पुष्पांजलि क्षेपण करें।

चतुर्थ वलय में 64 अर्घ है। प्रथम 32 अर्घ विघ्ननाशक और अन्त के 32 अर्घ उत्तम फलदायक है।

भुजंगप्रयात छन्द

मन के विकार सब नाशन हेतु तेरी,
पूजा प्रशांति करती, लगती न देरी,
हे शांतिनाथ भगवन्! भवताप हारी,
करता प्रणाम तुमको अघ नाश कारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मानसिक पापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाचा प्रयत्नकृत दोष निवारने को,
पूजा समर्थ मम जन्म सुधारने को,
हे शांतिनाथ भगवन्! भवताप हारी,
करता प्रणाम तुमको अघ नाश कारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वाचनिक पापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।

कायाकुठार-कृत पाप प्रणाश कारी,
अर्चन सशक्त तव नाथ प्रदोष हारी।
हे शांतिनाथ भगवन्! भवताप हारी,
करता प्रणाम तुमको अघ नाश कारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री कायिक पापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छन्द

राज्यश्री, पुर, गेह त्याग सों होय उपद्रव भारी,
उनके नाशन हेतु प्रभु की पूजा मैं विस्तारी।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर लोकालोक निहारें।।4।।

ॐ ह्रीं जिनराज लक्ष्मीपुर राज्यगेह पद भ्रष्टोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वोपार्जित कर्म उदय सों, घोर दारिद्र्य सतावे।
लक्ष्मी हीन विमोही नर नित तीव्र महादुख पावे।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्तिवधू के कंत जिनेश्वर लोकालोक निहारें।।5।।

ॐ ह्रीं दारिद्रोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भीम भगंदर कुष्ट जलोदर, आदि हैं रोग घनेरे।
व्याधि उपद्रव कर्म विनाशन हेतु जजूँ पद तेरे।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर लोकालोक निहारें।।6।।

ॐ ह्रीं भीमभगंदरगलितकुष्टगुल्मरक्तपित्तवातकफस्फकोटकाद्युपद्रव-निवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगे, जीव महा मुख पावे।
निज परणति को भूले मोही, आरत रौद्र सतावे।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर लोकालोक निहारें।।7।।

ॐ ह्रीं इष्टवियोगानिष्टसंयोगोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज सेना, पर सेनाकृत जब, घोर उपद्रव आवे।
धर्माराधन ध्यान विमुख हो, प्राणि महा दुख पावे।।
शांति प्रभु के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर लोकालोक निहारें।।8।।

ॐ ह्रीं स्वचक्रपरचक्रोद्भवोपद्रवनिवारक श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निवपामीति स्वाहा।

नाना आयुध देह विनाशक, घोर उपद्रव आवे।
आर्त्तरौद्र की परिणति व्यापै, कोई न आन बचावे।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर लोकालोक निहारें।।9।।

ॐ ह्रीं विविधायुधोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जलचर प्राणी दुष्ट नक्र और मत्स्य भयंकर भारी।
कर्म उदय जल बीच सतावें, व्याकुल हों नर-नारी।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर लोकालोक निहारें।।10।।

ॐ ह्रीं जलचरजीवदुष्टोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वन पर्वत के मध्य चतुष्पद, सिंह गजादिक प्राणी।
आक्रामक बन दुष्ट सतावें, होय दुखी अज्ञानी।।
शांतिनाथ के पद -पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर लोकालोक निहारें।।11।।

ॐ ह्रीं व्याघ्रसिंहगजादिवनपर्वतवासिश्वापदाद्युपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भूचर खेचर क्रूर जीव-कृत तीव्र उपद्रव आवे।
आशा पाश बँधा यह प्राणी परपरणति लपटावे।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर,लोकालोक निहारें।।12।।

ॐ ह्रीं भूचरगगनचरक्रूरजीवोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भीम भुजंगम वृश्चिक, भीषण घोर विषैले प्राणी।
हालाहल विषदंत बदन से पीड़ित हो जग प्राणी।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वंधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।13।।

ॐ ह्रीं व्यालवृश्चिकादिविषदुर्द्धरोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नखश्रृंगादिक तीक्ष्ण विषैले, जीवों के दुख भारी।
कर्म असाता प्रेरित प्राणी, भुगते दुख अति भारी।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।14।।

ॐ ह्रीं दुष्टजीवपदकरनखोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वन पशुओं के दाढ़ सींग नख अति विकराल सतावें।
चंचु तुंड दंतादिक कृत दुख घोर असाता लावें।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।15।।

ॐ ह्रीं चंचुतुंडदाढाकंटकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दावानल वन मध्य भयंकर खग मृग वृक्ष जलावें।
कर्म असाता उदय यह प्राणी घोर महादुख पावें।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।16।।

ॐ ह्रीं दावानलोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

घोर प्रचंड पवन का दुर्जय, वेग भयंकर आवे।
सागर मध्य प्रतुंग लहर की, भीम भँवर लहरावे।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।17।।

ॐ ह्रीं प्रचंडपवनोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नौका पोत स्फोट उदधि में, दारुण दु:ख प्रदाता।
सागर मध्य पतन जब होवे, कर्म विपाक असाता।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।18।।

ॐ ह्री श्री नौकास्फुटितपतनोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वन पर्वत भूमंडल मध्ये, भीम उपद्रव भारी।
प्रभु पूजा से दूर सभी हों, जिन पद धोक हमारी।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर लोकालोक निहारें।।19।।

ॐ ह्रीं वनगगनमेदिनीभयंकरोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरिता सागर कूप सरोवर, वापी झील जलाशय।
इन मध्ये उपसर्ग भयंकर, करता कर्म दुराशय।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।20।।

ॐ ह्रीं नदीसरोवराब्धिकूपह्रदोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत्पात भयंकर वर्षा, ओला पाला भारी।
दैव विपाक अनेक उपद्रव से पीड़ित नर -नारी।।
शंतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।21।।

ॐ ह्रीं विद्युत्पातादिभीमांबुवृष्ट्युपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युद्ध स्थल के मध्य शत्रु दल, शस्त्र अनेक चलावे।
कर्म असाता अकाल मरण दुख जीव संसारी पावे।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।22।।

ॐ ह्रीं संग्रामस्थलारिनिकटोपद्रवनिवरकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत अरु घोर पिशाच घनेरे।
कर्मों के परिपाक विषम सों आय रहें नित घेरे।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर,लोकालोक निहारें।।23।।

ॐ ह्रीं शाकिनीडाकिनीभूतप्रेतपिशाचादिभयनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उच्चाटन मोहन थंभन कृत, घोर उपद्रव आवें।
विद्या दुष्ट अनेक प्रकारी आकर नित्य सतावें।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।24।।

ॐ ह्रीं मोहनस्थंभनोच्चाटनप्रमुखदुष्टविद्योपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट नवग्रह कृत पीड़ा जब, कर्म उदय से आवे।
अज्ञानी नर मूढ़ मिथ्याती कुगुरु कुदेव मनावे।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।। 25।।

ॐ ह्रीं दुष्टग्रहाद्युपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोह शृंखला के दृढ़ बंधन, अंग प्रत्यंग दुखावें।
पीड़ित प्राणी महा दुख पावे, हाहाकार मचावें।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।26।।

ॐ ह्रीं शृंखलाद्युपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अल्प आयु कृत कर्म संयोगे, होय मरण दुख भारी।
मन में होय प्रचंड विकलता, दुखिया सब संसारी।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।27।।

ॐ ह्रीं अल्पमृत्यूपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म उदय दुर्भिक्ष उपद्रव, अन्न अभाव सतावे।
जठरानल की भीषण ज्वाला से प्राणी विलखावे।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।28।।

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय यह लाभ विरोधी, कर्म उदय जब आवे।
व्यापारिक वृद्धि ना होवे, धन उद्योग नशावे।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।29।।

ॐ ह्रीं व्यापारवृद्धिहतोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संबंधी परिवार सगे सुत, भ्राता होय विरोधी।
घोर उपद्रव आन्य करें अरु होवे कार्य निरोधी।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।30।।

ॐ ह्रीं बंधुत्वोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अकुटुंबी संतान बिना नित अति संक्लेशित होंवें।
मिथ्यामोह उदय से प्रेरित प्राणी रोवें धोवें।।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।31।।

ॐ ह्रीं अकुटुंबोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पाप उदय अपकीरति भारी, आकुलता उपजावे।
मन संतान महादुख ज्वाला सब सुख शांति जलावे।
शांतिनाथ के पद-पंकज जो मन-मंदिर में धारें।
मुक्ति वधू के कंत, जिनेश्वर, लोकालोक निहारें।।32।।

ॐ ह्रीं अपकीर्त्युपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गीता छन्द

विश्व के कल्याण की, मंगलमयी शुभ कामना।
ज्ञान दर्शन चरित्र तप हो, मोक्ष की प्रस्तावना।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।33।।

ॐ ह्रीं संपूर्णकल्याणमंगलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चिंतामणि के तुल्य फलप्रद, शांति प्रभु की भाव से।
अर्चना मैं नित करूं सानंद अतिशय चाव से।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना ।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।34।।

ॐ ह्रीं चिंतामणिसमानचिंतितफलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वमामीति स्वाहा।

कल्पद्रुम समफल प्रदाता ताप पाप विनाशिनी।
आराधना श्री शांति जिन की सतत मंगल कारिणी।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।35।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वल धर्मध्यान बाधारहिताय अबुधबोधप्रदाय श्री शांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

कामधेनू तुल्य अनुपम, सब मनोरथ पूरिणी।
आनंददायक अर्चना प्रभु की, सदा हितकारिणी।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूँ आराधना।।36।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षोपमकल्पितार्थफलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

4885

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परम उज्ज्वल धर्म ध्यानाराधना की कारिणी।
बाधा रहित प्रभु अर्चना आनंद मंगल दायिनी।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।37।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलधर्मध्यानफलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य के सब प्राणियों को नेत्र का उत्सव करे।
मनसिज सदृश सौंदर्य पावे, जो प्रभु पूजा करे।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।38।।

ॐ ह्रीं कामदेवस्वरूपप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर चंदन अगुरु पंकज, तुल्य सुरभित देह हो।
यदि शांति जिन की अर्चना में अमल निश्चल नेह हो।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।39।।

ॐ ह्रीं सुगंधशरीरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यांबुजों को नित प्रफुल्लित, नाथ का भामंडलम्।
रविरश्मिवत् करता प्रकाशित, शांति जिन गुण मंडलम्।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।40।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथाह्लादकारकपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षीरसागर की उज्ज्वल, अमल लहरों से धवल।
देवता गाते निरंतर आपके हैं गुण विमल।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।41।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलगुणगणसहितपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वाचस्पति के तुल्य निर्मल विशद प्रतिभादायिनी।
आपकी है अर्चना ज्यों पूर्णिमा की चांदनी।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।42।।

ॐ ह्रीं वाचस्पतिसमानपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नवविधि चतुर्दश रत्न का स्वामित्व जो चक्रेश को।
खग देव नर द्वारा समर्चित, पूजता तीर्थेश को।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।43।।

ॐ ह्रीं चक्रवर्तिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोनों कुलों की शांति को, निज गुण विभूषित जो करें।
रमणी रमा वरती उन्हें जो शांति जिन पूजा करें।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।44।।

ॐ ह्रीं श्रावकसद्वृत्तकरणबुद्धिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्चना शुभ भाव से अरहंत की जो नित करें।
श्रावकोत्तम व्रतधरन सद्बुद्धि को वे नर वरें।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।45।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलकीर्तिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शारदी नव ज्योत्स्ना सम कीर्ति का विस्तार हो।
प्रभु अर्चना ही मात्रशुभ जिन के लिए आधार हो।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।46।।

ॐ ह्रीं परमोज्ज्वलकीर्तिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याण कर्मी, राज्यलक्ष्मी, धनद सम वे नर वरें।
जिनराज की शुभ भाव से जो नर सतत पूजा करें।।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।47।।

ॐ ह्रीं गर्वरहितपरमलक्ष्मीपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यंच नरक भव कभी, जिन भक्त को मिलता नहीं।
नर देव भव शुभ लोक में पाते प्रभु के भक्त ही।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।48।।

ॐ ह्रीं नरकतिर्यचगतिरहितनरसुरगतिसहित भवप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावना षोडश विमल प्रभु अर्चना से प्राप्त हों।
तीर्थंकर पदवी मिले, जिससे कि निश्चय आद्य हों।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।49।।

ॐ ह्रीं षोडशकारणभावनासाधनबलपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लोक दुर्लभ स्वप्न सोलह, नाथ -माता देखती।
एक जननी पद प्रसव जिन पूज से अवलोकती।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।50।।

ॐ ह्रीं जिनजननीतुल्यैकजननीपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थेश वन सुरशैल पर होता विशद अभिषेक है।
जिन अर्चना का हृदय जिन के प्रकट विमल विवेक है।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।51।।

ॐ ह्रीं मेरुशिखरेस्नानयुक्तपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

संसार भोग शरीर से निर्विण्ण दीक्षा दायकम्
नर जन्म प्रभु की अर्चना से शुभ मिले शिवकारकम्।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।52।।

ॐ ह्रीं सिद्धसाक्षीदीक्षाकारि भवप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनचंद्र के निर्मल सुशासन के असीम प्रभाव से।
वज्रवृषभ नाराच संहनन,प्राप्त पूजन भाव से ।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।53।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननमुक्तिप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रयामृत से विभूषित, ध्यान के उपयोग से।
निर्मल यथा विख्यात हो, ज़िन अर्चना के योग से।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।54।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातरत्नत्रयाचरणयुक्तबलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज ध्यान में तल्लीन आतमस्वाद अमृत चख सके।
तीर्थेश शांति जिनेश पूजन से निजातम लख सके।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।55।।

ॐ ह्रीं स्वात्मध्यानामृतस्वादसहितभवप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

राजती बारह सभा जिन समवशरणे सर्वदा।
त्रैलोक्य श्री जिनअर्चना से प्राप्त होती सुखप्रदा।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।56।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षोपमकल्पितार्थफलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान की दिव्य-ध्वनि दिन रात में चतु बार हो।
जिननाथ पूजन से मिले कैवल्य, बड़ा पार हो।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना ।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।57।।

ॐ ह्रीं सत्केवलज्ञानविभूतिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्मों से रहित, गुण अष्ट युक्त परमात्मा।
निर्भय निरंजन सिद्ध पद पाता सुधी धर्मात्मा।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।58।।

ॐ ह्रीं निरंजनपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चित्त को आनंद देती नाथ की दिव्यार्चना।
सम्यक्त्व प्रभु पुजारी की करें सुर गण वंदना।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।59।।

ॐ ह्रीं चिदानंदकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिन के विमल मुख चंद्र से, अमृत वचन अनुपम झरें।
त्रैलोक्य की संपत्तियाँ प्रभु के पुजारी को वरें।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।60।।

ॐ ह्रीं वचनानंदकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन नाथ के तन की अलौकिक, दिव्य परमाणु प्रभा।
देख कर होती प्रफुल्लित देव नंर पशु की सभा।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।61।।

ॐ ह्रीं कायानंदकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वार्थ वर्गों का प्रसाधक, नाथ मनसा चिंतनम्।
तीर्थेश की दिव्यार्चना का है महत् अतिशय फलम्।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।62।।

ॐ ह्रीं अर्थवर्गसिद्धसाधनकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिननाथ पूजा से सफल निज देह को जो नर करें।
आश्चर्य क्या यदि मोक्ष-लक्ष्मी को सहज ही वे वरें।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।63।।

ॐ ह्रीं मोक्षवर्गसाधनसिद्धकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निर्लिप्त श्री जिनराज, चौसठ ऋद्धियों के नाथ हैं।
झुक रहे शत इंद्र के पद पंकजों में माथ हैं।
तीर्थेश चक्रि अनंग पद भूषित प्रभु की अर्चना।
श्री शांतिनाथ जिनेश की मैं नित करूं आराधना।।64।।

ॐ ह्रीं चतुः षष्टिऋद्धिसमानांगाय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शत एक विशंति, तीर्थंकर जिन चंद्र की पूजा करूं।
विघ्नौघ के शांत्यर्थ मैं, पूर्णार्घ चरणों में धरूं।

ॐ ह्रीं शतैकविंशति अंगाय श्रीशांतिनाथाय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हंत के अतिरिक्त कोई, है नहीं जग में शरण।
संसार सागर में सुनौका, मात्र हैं प्रभु के चरण।

।। इतीष्टप्रार्थनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत शांतिकराय
सर्वोपद्रवशांतिं कुरु कुरु ह्रीं नमः स्वाहा।

(जातिपुष्प या लवंग से 108 बार जाप देवें।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाला

दोहा

शांतिनाथ भगवान के, गुण हैं अपरंपार।
निराधार संसार में, हैं सब के आधार।
पंचम श्री चक्रीश हैं, द्वादशवें रतिनाथ।
षोडशवें तीर्थेश को, सदा नवाऊं माथ।

त्रोटक छन्द

जय शांति प्रभो चिद्रूपराज, जग जलनिधि में अद्भुत जहाज।
जय कर्म विनाशक शांतिनाथ, जय विघ्न विनाशक शांतिनाथ।।
गुण वारिधि जय हे शांतिनाथ, जय मुक्ति वधू के कंत नाथ।।

जय आत्म हितंकर शांतिनाथ, जय काम विनाशक शांतिनाथ।
जय पाप क्षयंकर शांतिनाथ, त्रिभुवन सुकीर्ति जय शांतिनाथ।।
जय सम्यक् दर्शन हेतु नाथ, शिव मार्ग विधायक शांतिनाथ।
जय भव गृह अर्गल शांतिनाथ, भव दुख विध्वंसक शांतिनाथ।।

जय मातृ शुभे जय शांतिनाथ, त्रिभुवन के त्राता पितृ नाथ।
जय शांतिनाथ शिवनाथ प्रभो! जय हित संदेशक नाथ विभो।।
जित जन्म जरा हे मृत्यु जयी, जय रोग शोक हर कर्म जयी।
शिव सुख के साधन शांतिनाथ, भव भय के हारी शांतिनाथ।

जय मान बाली के मदमर्दक, जय शांतिनाथ गुण गण वर्द्धक।
तस्कर कृत दुःख विनाशक हे! भय भूत पिशाच विदारक हे।।
नवग्रह कृत बाधा दूर करो, व्यालादि विपत्ति प्रचूर करो।
जय भव्य सरोज दिवाकर हो, जय शिव सुख पद्म प्रभाकर हो।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाप पंक में मग्न, विश्व के हैं सब प्राणी।
मल प्रक्षालन हेतु, नाथ की मंगल वाणी।
प्रभु पद-पंकज में जलधारा, अर्पित करते जो प्राणी।
होती निश्चय नित्य विश्व में, शांति सुधा वह कल्याणी।

शान्तये शान्तिधारा (3 बार)

श्री शांतिनाथ भगवान को, जो पूजे मन लाय।
स्वर्गों में संशय नहीं, निश्चय शिवपुर जाय।।

इत्याशीर्वादः ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आरती

ॐ जय शान्तिनाथ स्वामी। प्रभु जय शांतिनाथ स्वामी।
मन वच तन से बंदू-2, जय अन्तर्यामी।। ॐ जय...।।

गर्भ जन्म जब हुआ आपका, तीन लोक हर्षे। स्वामी।
इन्द्र कियो अभिषेक शिखर पर, शिवमग के स्वामी।। ॐ जय...।।

पंचम चक्री भये आप ही, षट खंड के स्वामी।
राज्य विभव को भोगे-2, कामदेव नामी।। ॐ जय...।।

अतुल विभव को तृणवत् त्यागे, हुवे कर्म नाशी स्वामी।।
भये आप तीर्थंकर-2, शिवरमणी स्वामी।। ॐ जय...।।

वीर सिन्धु को नमस्कार कर, तव आरती करूँ स्वामी।। प्रभु
'सूरज' शिवपुर पावो-2, महासुक्खधामी।। ॐ जय...।।

(ब्र. सूरजमल)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदि भला किसी का

यदि भला किसी का कर ना सको, तो बुरा किसी का मत करना।
अमृत न पिलाने को हो घर में, तो जहर पिलाते भी डरना ।। टेक।।

यदि सत्य मधुर न बोल सको तो झूठ कटुक भी मत बोलो।
यदि मौन रखो सबसे अच्छा, कम से कम विष तो न घोलो।
बोलो तो पहले तुम तोलो, वचन सुहित बोला करना।।यदि भला।।

यदि घर न किसी का बना सको, तो झोंपड़ियाँ न जला देना।
यदि मरहम - पट्टी कर न सको, तो खार नमक न लगा देना।
यदि दीपक बनकर जल न सको, तो अंधकार भी मत करना।।यदि भला।।

यदि फूल नहीं बन सकते तो, काँटें बनकर न बिखर जाना।
मानव बनकर सहला न सको तो, दिल भी किसी का न दुखाना।
यदि देव नहीं बन सकते तो, दानव बनकर भी मत मरना।।यदि भला।।

मुनि पुष्प अगर भगवान नहीं, तो कम से कम इन्सान बनो।
किन्तु न कभी शैतान बनो और कभी न तुम हैवान बनो।
यदि सदाचार अपना न सको तो दुराचार भी मत करना।।यदि भला।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुःख-सुख

दुःख भी मानव की सम्पत्ति है, तू क्यों दुःख से घबराता है।। टेक।।

दुःख आया है तो जायेगा, सुख आया है तो जायेगा।
दुःख जायेगा तो सुख देकर, सुख जायेगा तो दुःख देकर।
सुख देकर जाने वाले से रे मानव! क्यों भय खाता है।। दुःख भी।।

सुख में हैं व्यसन प्रमाद भरे, दुःख में पुरूषार्थ चमकता है।
दुःख की ज्वाला में पड़ कर ही, कुन्दन सा तेज दमकता है।
सुख में सब भूले रहते हैं, दुःख सब को याद दिलाता है।। दुःख भी।।

सुख संध्या का वह लाल क्षितिज जिसके पश्चात् अँधेरा है।
दुःख प्रातः का झुटपुटा समय, जिसके पश्चात् सवेरा है।
दुःख का अभ्यासी मानव ही, सुख पर अध्कािर जमाता है।। दुःख भी।।

दुःख के सम्मुख जो सिहर उठे, उनको इतिहास न जान सका।
जो दुःख में कर्मठ, धीर रहे, उनको ही जग पहचान सका।
दुःख एक कसौटी है, जिस पर, मानव ही परखा जाता है।। दुःख भी।।

4885

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi